अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य पर संकट : मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में'

सौ. विद्या शामराव चौगले, एम्.ए., बी.एड., नेट–सेट, पीएच्.डी.(रजि.), शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ।

.....

गजानन माधव मुक्तिबोध नई कविता के एक सशक्त कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं। मार्क्सवादी चेतना के कवि तथा यथार्थता के प्रति सजग कवि के रूप में भी हम उनके दर्शन करते हैं। नई कविता के संदर्भ में देखा जाए तो मुक्तिबोध का लेखन कार्य, नई कविता को यथार्थता की एक अलग ऊँचाई पर रखता है । उन्होंने आधुनिक जीवन की विभिन्न समस्याओं पर भाष्य किया है । ''जीवन के वैषम्य, मानव की पीड़ा, मानसिक तनाव, अंतसंघर्ष, युगीन पाशविकता, व्यवस्था की क्रूरता, युग संप्रक्ति, सामाजिक परख और जिंदगी की नग्न यथार्थता को व्यक्त करने की प्रबल क्षमता उनके काव्य में दिखाई देती है ।''[1]

मुक्तिबोध का झुकाव मार्क्सवाद की तरफ ही रहा है। उनके जीवन में परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी रही कि वे मार्क्सवादी विचारों के तरफ झुकने के लिए बाध्य रहे। मुक्तिबोध बचपन से ही विद्रोही और संवेदनशील स्वभाव के रहे हैं, जो एक जनवादी, समाजवादी कवि के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। मार्क्सवादी विचारों को अपनाते हुए उन्होंने पुँजीवाद, साम्राज्यवाद, शोषण का विरोध किया और पीड़ितों का, शोषितों का पक्ष लिया । यह करते समय उनके काव्य के माध्यम से उन्होंने बाहरी संघर्ष के साथ, तनाव के साथ अंतर्गत छटपटाहट, संघर्ष तथा आत्मसंघर्ष को भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने ऐसे प्रतिकों की योजना की है जो बाहरी सामाजिक व्यवस्था तथा घटनाओं के साथ उनके व्यक्तिगत घटनाओं को भी प्रगट करते हैं। मुक्तिबोध अपने जीवन में सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर बराबर संघर्ष करते रहे हैं। नौकरी में एक जगह पर न टिक पाना, असफलता, उपेक्षा, दुःख, पुत्रशोक, बीमारी, नौकरी के लिए भटकना आदि कई संघर्ष उन्होंने अपने जीवन में झेले हैं।

एक सच्चे साहित्यकार का जीवन से गहरा संबंध होता है। वह अपनी रचना के लिए समाज जीवन तथा स्वयं के जीवन से ही तो प्रेरणा पाता है । इस दृष्टि से देखा जाए तो मुक्तिबोध का रचना संसार जीवन से गहरा लगाव रखता है। उनके काव्य में उनके प्रतिकों के माध्यम से समाज जीवन की कई समस्याएँ उजागर होती हैं और इसके साथ ही कवि का आत्मसंघर्ष भी प्रस्तुत होता है । इस दृष्टि से देखने पर कवि की 'अंधेरे में' कविता महत्त्वपूर्ण है। 'अंधेरे में' कवि की अंतिम लंबी कविता है, जो 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' संकलन में संकलित है। यह कविता सबसे लंबी और सशक्त मानी गई है । कई विद्वानों ने इस कविता के अर्थ को अपने–अपने ढंग से पहचानने का प्रयास किया है और इस कविता को मुक्तिबोध के जीवन की घटनाओं से संबंधित करने का भी प्रयास किया है । एक तर्क तथा विचार यह भी है जो हरिशंकर परसाई जी ने दिया है। उन्होंने इस कविता का संदर्भ मुक्तिबोध द्वारा तैयार की पुस्तक 'भारत : इतिहास और संस्कृति' को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रतिबंधित करना इस घटना के साथ जोड़ा है । उनके अनुसार मुक्तिबोध उस समय बहुत बेचैन थे और उन्होंने कहा था– ''....वे आपकी कलम छीन लेगी, आपके गले को दबाकर आपको बोलने नहीं देगी...।''[2] मुक्तिबोध के इन शब्दों से अभिव्यक्ति पर आया संकट प्रखरता के साथ सामने आता है, जो आज की परिस्थितियों में अधोरेखित हो रहा है ।

'अँधेरे में' कविता का संदर्भ इस घटना से जोड़ने पर आज अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य पर आया संकट इस सामाजिक समस्या के साथ एक साहित्यकार, विचारक होने के नाते मुक्तिबोध की अभिव्यक्ति से मिलने की, उससे एकरूप होने की छटपटाहट, आंतरिक संघर्ष भी इस कविता में मुखरित हुआ है। इस छटपटाहट में कवि अपनी सुंदर, दिव्य अभिव्यक्ति से एकरूप तो होना चाहता है लेकिन डरता भी है उसके यथार्थ से ।

कविता का प्रारंभ फैंटसी के सहारे ही होता है, जिसमें जिंदगी के अँधेरे में कोई लगातार चक्कर काट रहा है। जिसके पैरों की तो आवाज सुनाई देती है, लेकिन वह दीखता नहीं। जैसे कोई तिलस्मी खोह में गिरफ्तार है, बंदिस्त बनाया गया है उसे। कवि स्वयं से पूछता है कि वह कौन है ?

''जिंदगी के....
कमरों में अँधेरे
लगाता है चक्कर
कोई एक लगातार
आवाज पैरों की देती है सुनाई
बार–बार.... बार–बार
वह नहीं दीखता.... नहीं ही दीखता,
तिलस्मी खोह में गिरफ्तार कोई एक
अस्तित्व जमाता
अनिवार कोई एक,
और मेरे हृदय की धक्–धक्
पूछती है– वह कौन....।''[3]

कवि स्वयं से पूछता है कि वह कौन है, तभी दिवार से अचानक फूले हुए पलिस्तर गिरते हैं और दिवार पर मुख बन जाता है जिसकी नुकीली नाक और भव्य ललाट है, दृढ़ हनु है ।

''इतने में अकस्मात गिरते हैं भीतर से
फूले हुए पलिस्तर

कोई बड़ा चेहरा बन जाता है,
स्वयमपि
मुख बन जाता है दिवाल पर,
नुकीली नाक और
भव्य ललाट है,
दृढ़ हनु.... ।''[4]

सभी ओर अँधेरा है, शहर के बाहर, तालाब के उस पार, सभी ओर अँधेरा ही अँधेरा है और इस निस्तब्ध अँधेरे में से एक श्वेत आकृति उभरती है, जिसका कुहरीला बड़ा चेहरा फैल जाता है वह मुस्काता है, अपनी पहचान बताता है, परंतु कवि उसे पहचान नहीं पाता ।

घने अँधेरे में बिजलियाँ चमक रही हैं तेज हवा के झोंकों से वृक्ष की डालियाँ जोरों से झपट रही हैं, तभी अकस्मात् वृक्षों में छिपी हुई किसी एक तिलस्मी खोह का शिलाद्वार धड् से खुलता है, उस खोह के तम में एक लाल मशाल घुसती है, जिससे वह कुहरा लाल दिखाई देता है और उस लाल कुहरे में कवि को रक्तालोक–स्नात पुरुष एक रहस्य–सा साक्षात दिखाई देता है। जिसका तेजपूँज चेहरा, प्रभावमय ललाट, गौरवर्ण, दीप्त–दृग, सौम्य–मुख और स्नेहमयी प्रिय रूप देखकर कवि को संदेह होता है, वह रहस्यमय व्यक्ति और कोई नहीं तो वह कवि की अब तक न पाई गई उनकी अभिव्यक्ति है–

''वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पाई गई मेरी अभिव्यक्ति है,
पूर्ण अवस्था वह ।''[5]

कविता के दूसरे खंड में कवि कहता है कि चारों ओर सूनापन है। उसी समय दरवाजे पर साँकल बजती है। कवि सोचता है कि इस समय कौन आ सकता है। यह वही है जो तिलस्मी खोह में दिखा था, जो हर जगह अँधेरे में दिखाई देता है। कवि उसके रूप सौंदर्य से, स्नेह से, परिचित है, कवि द्वार खोलकर उससे मिलना चाहता है, एक रूप हो जाना चाहता है –

'' इतने अँधेरे में, कौन आया मिलने ?
विमन प्रतीक्षातुर कुहरे में धिरा हुआ
द्युतिमय मुख– वह प्रेम भरा चेहरा
भोला–भाला भाव
पहचानता हूँ बाहर जो खड़ा है !!
उसे देख, प्यार उमड़ता है अनायास !
लगता है – दरवाजा खोल कर
बाँहों में कस लूँ
हृदय में रख लूँ
घुल जाऊँ, मिल जाऊँ लिपट कर उससे.... ।''[6]

लेकिन कवि डरता है उससे मिलने से। कवि में उसकी ओर जाने के लिए सामर्थ्य नहीं है। वह भयानक अँधेरे खड्ड़े में पड़ा है, उसमें उठने की भी ताकद नहीं है। कवि को अपनी कमजोरियों से ही प्रेम है। कवि यहाँ बताना चाहता है कि अभिव्यक्ति से एकरूप होने के लिए एक सामर्थ्य की आवश्यकता है जो कवि में नहीं है। कवि अपनी कमजोरियों का कारण आगे कर उससे मिलने से कतराता है, डरता है। कवि को डर लगता है कि वह उसे एक उत्तुंग शिखर पर बिठाएगा, जो खुरदरा है, वहाँ वह कवि को अकेला ही छोड़ देगा और रस्सी के पूल पर चलकर दूसरे कगार पर पहुँचने के लिए कहेगा। अर्थात् सच्ची अभिव्यक्ति तथा यथार्थ का प्रस्तुतिकरण बिना किसी डर के करना एक खुरदरे तुंग शिखर पर बैठने जैसी तथा दो शिखरों की यात्रा एक रस्सी के पूल पर चलकर करने जैसी बात है। कवि यहाँ बताना चाहता है कि अभिव्यक्ति से तादात्म्य पाना कोई सहज बात नहीं है ।

कवि डर से दरवाजा खोलना नहीं चाहता। फिर भी उसके प्रति कवि का प्रेम कवि को उसे छोड़ने नहीं देता। बाहर का दबाव कितना भी क्यों न डरावा हो एक सच्चा कवि अपनी परम अभिव्यक्ति से दूर नहीं हो पाता।

''नहीं, नहीं, उसको मैं छोड़ नहीं सकूँगा,
सहना पड़े–मुझे चाहे जो भले ही .... ।''[7]

भय और प्रेम के इस द्वंद्व में कवि द्वार खोलने पर मजबूर होता है, लेकिन देखता है कि बाहर कोई नहीं है, वह चला गया है कवि की राह देखकर । रात का पक्षी कहता है–

''वह चला गया है,
वह नहीं आएगा, आएगा ही नहीं
उसको तू खोज अब
उसका तू शोध कर
वह तेरी पूर्णतम अभिव्यक्ति
उसका तू शिष्य है (यद्यपि पलायक)
वह तेरी गुरु है, गुरु है.... ।''[8]

कवि की राह देखकर वह चला गया है, शहर में गाँव में निकल गया है । कवि को अब उसे ढूँढ़ना है । एक बार एकाएक वह कवि को गलियों में, भीड़ में दिखाई देता है । कवि उसे पुकारना चाहता है तभी अकस्मात वह कहीं दिखाई नहीं देता । कवि अब उसे खोज रहा है । उसे पाना चाह रहा है–

''अन खोजी निज–समृद्धि का वह परम–उत्कर्ष,
परम अभिव्यक्ति
मैं उसका शिष्य हूँ,
वह मेरी गुरु है,
गुरु है .....!!''[9]

अभिव्यक्ति जो आत्मउन्नति, आत्मउत्कर्ष का साधन होती है, अब कवि उसे पाना चाहता है । कवि का मानना है कि परम अभिव्यक्ति से निज का अर्थात आत्मा का उत्कर्ष होता है । इसीलिए कवि अब उसे खोज रहा है । हर गली में, हर सड़क पर, प्रत्येक गतिविधि में कवि उसे ढूँढ़ता है । हर चेहरे को झाँक कर देखता है, हर चरित्र में उसे खोजता है । प्रत्येक आत्मा में देश तथा राजनीतिक परिस्थिति में खोजता है । कवि अपनी खोई हुई परम अभिव्यक्ति को प्राप्त करना चाहता है–

''....इसीलिए मैं हर गली में
और हर सड़क पर
झाँक–झाँक देखता हूँ हर एक चेहरा,
खोजता हूँ पठार... पहाड़.... समुंदर
जहाँ मिल सके मुझे
मेरी वह खोई हुई
परम अभिव्यक्ति अनिवार
आत्म–सम्भवा ।''[10]

एक साहित्यकार के लिए अभिव्यक्त होना, प्रस्तुत होना बहुत मायने रखता है। रचनाकार जीवन के पलों को जीते हुए व्यक्तिगत तथा समाज जीवन में कई अनुभव प्राप्त करता है और उन्हें अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त करता है। यह उसके आत्मा का ही विस्तार होता है तथा संवेदनाओं का विस्तार होता है। रचनाकार की अभिव्यक्ति पर ही अगर पाबंदी लगाई जाए तो उसे उसकी स्वयं की आत्मा से तथा संवेदनाओं से काट देने जैसा है। एक सच्चा साहित्यकार अपने अनुभूत सत्य को व्यक्त किए बिना कैसे रह सकता है। वह जो अपने आत्मा द्वारा अनुभूत करता है उसको साहित्य द्वारा सभी की अनुभूति बना देता है। जब एक रचनाकार अपने इर्द–गिर्द कोई समस्या, कोई गलत–व्यवहार, समाज विघातक घटकों को पाते हैं तो उन्हें भी प्रस्तुत करते हैं। तो ऐसे समय उनपर दबाव–तंत्र अपनाकर उन्हें व्यक्त होने से रोकना कहाँ तक बराबर है ?

प्रत्येक व्यक्ति को एक मनुष्य होने के नाते व्यक्त होने का, अपने विचार, मत प्रगट करने का अधिकार होता है। जो एक साहित्यकार, विचारक को भी है। आज के परिवेश में देखा जाए तो अपने विचार अभिव्यक्त करना बड़ा खतरनाक बन रहा है। जान पर भी बन रही है। ऐसे में अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य संकट में आया है। और मुक्तिबोध के अंतिम दिनों में लिखी गई यह कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। मुक्तिबोध की पुस्तक पर सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाना इससे उन्हें गहरा मानसिक आघात हुआ, जिससे वे बीमार रहने लगे और इसी में उनका अंत भी हुआ। एक प्रतिभाशाली साहित्यकार की जो नियती होती है वही नियती मुक्तिबोध जैसे महान साहित्यकार की थी ।

संदर्भ –

1. नई कविता और मुक्तिबोध – डॉ. वर्षारानी, पृ. 103
2. नई कविता और मुक्तिबोध – डॉ. वर्षारानी, पृ. 233
3. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता – सं. डॉ. नरसिंह प्रसाद दुबे, प्रा. रामानुज गिलडा, पृ. 46
4. वही, पृ. 46, 47
5. वही, पृ. 48
6. वही, पृ. 49
7. वही, पृ. 50
8. वही, पृ. 51, 52
9. वही, पृ. 82
10. वही, पृ. 83